शोध मंथन Vol. XIV No.II Apr.-June 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

मंजूर एहतेशाम के उपन्यास 'सूखा बरगद' और 'बशारत मंजिल' में मध्यमवर्गीय मुस्लिम समाज और उसकी मनोदशा

प्राप्तिः 03.06.2023
स्वीकृतः 25.06.2023

38

डॉ० राजेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, बी०बी० नगर,
बुलन्दशहर (उ०प्र०)
ईमेलः *dr.rajesh.thakur05@gmail.com*

ममता
शोधार्थिनी, हिन्दी विभाग,
सहायक अध्यापक,हिन्दी
वृहत समाज सुधार इण्टर कालिज, छपरौली
ईमेलः *kavyanaman50@gmail.com*

सारांश

मंजूर एहतेशाम के इन दोनों उपन्यासों में मध्यमवर्गीय मुस्लिम समाज के ताने–बाने को जितनी बखूबी से चित्रित किया गया है वह अपने आप में अनोखा है। उन्होंने अपने उपन्यासों में दिखाने का प्रयास किया है कि समाज का विघटन किस प्रकार हो रहा है और युवा अपने निश्चित लक्ष्य से किस प्रकार भटक रहा है। साथ ही समाज में कितनी कुरीतियाँ पनप रही हैं और वह तमाम मध्यमवर्गीय युवाओं एवं उनके परिवारों को अपनी जकड़ में ले रही है। इन रूढ़ियों के भँवर में अधिकतर परिवार उलझते जा रहे हैं। उन्हें एक निश्चित राह की तलाश है जिसे लेखक दिखाने की कोशिश कर रहा है। पाश्चात्य संस्कृति के मोहपाश में पड़कर अपने परिवार के प्रति उदासीन हो रहा है और भारतीय संस्कृति के स्थान पर पाश्चात्य संस्कृति को श्रेष्ठ बताने की कोशिश कर रहा है। अंधविश्वास इस कदर परिवारों में गहरी पैंठ बना चुका है कि उससे निकलना शिक्षित समाज के लिए भी कठिन लग रहा है। इसके साथ ही मध्यमवर्गीय समाज की आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आर्थिक स्थिति भी मनुष्य को अंधविश्वास और भाग्यवादी बना देती है। आर्थिक स्थिति के कारण कितने स्वप्न पूरा होने से पहले टूट जाते हैं। सम्बन्धों में मधुरता खत्म होने लगती है। रिश्तेदारों का दायरा सिकुड़ने लगता है। इन्हीं सब तथ्यों पर दोनों उपन्यासों में बखूबी प्रकाश डाला गया है। मंजूर एहतेशाम के उपन्यास हिंदू–मुस्लिम एकता के भी प्रबल सरोकार हैं। इसके साथ ही राष्ट्रीयता की भावना भी उनमें कूट–कूटकर भरी है।

हिंदी साहित्य जगत में मंजूर एहतेशाम जी एक प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति के रूप में जाने जाते हैं। मंजूर एहतेशाम का जन्म उस समय हुआ जब भारत को स्वाधीनता प्राप्त हुए कुछ ही समय हुआ था। देश विभाजन की त्रासदी को झेल रहा था। प्रत्येक साहित्यकार के साहित्य में उसके जीवन की झलक रहती है वह जो महसूस करता है उन्हीं पलों को, उसी दर्द को, उसी आवेग को वह कथा और

पात्रों के माध्यम से अपने साहित्य में प्रस्तुत करता है। मंजूर एहतेशाम के साहित्य में भी ठीक उसी प्रकार के भाव दिखाई देते हैं। उनके लिखे उपन्यासों में मुस्लिम समाज में व्याप्त अंधविश्वास, भटकाव, नशाखोरी आदि समस्याएँ दिखाई देती है। इसी क्रम में उनकी लेखनी का सशक्त परिणाम 'सूखा बरगद' और 'बशारत मंजिल' के रूप में दिखाई पड़ता है। इन दोनों उपन्यासों में लेखक ने अपने अनुभवों को साकार रूप प्रदान किया है। दोनों उपन्यासों का केन्द्र मध्यमवर्गीय मुस्लिम परिवार है। दोनों उपन्यासों के मध्यम वर्ग के नज़रिये से देखा जाए तो वह मध्यम वर्ग की मानसिकता का जीवंत उदाहरण है। दोनों ही उपन्यासों में मध्यम वर्ग को ही कथा के केन्द्र में रखा गया है। गोपालराय के अनुसार– ''सूखा बरगद में उन्होंने देश विभाजन के बाद सामूहिक मुस्लिम मनोभाव को गहरी संवेदनशीलता और तार्किक विचारशीलता के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।''[1]

'सूखा बरगद' उपन्यास में जहाँ एक पढ़े–लिखे वर्ग को कथा के केन्द्र में रखा गया है, वहीं मध्यम वर्ग की समस्याएँ, सामाजिक स्थिति उनकी आर्थिक हालत इन दोनों उपन्यासों में बड़े ही मार्मिक ढंग से लेखक ने चित्रित की है, जैसे पारिवारिक विघटन की समस्या, परिवार के सदस्यों में यदि वैचारिक भिन्नता होगी तो परिवार का विघटन अवश्य होता है। परिवार के सदस्यों में आदतों तथा विचारों में भिन्नता होने पर उनमें बात–बात पर झगड़ा होता है। छोटी–छोटी चीज़ें आपसी मनमुटाव और कलह का कारण बनती हैं। परिणामस्वरूप पारिवारिक विघटन होता है, जिससे परिवार में अव्यवस्था फैल जाती है, जैसे 'बशारत मंजिल' उपन्यास के बन्दा अली खान और संजीदा के बीच विचारों की भिन्नता ही आपसी मनमुटाव तथा बाद में पारिवारिक विभाजन के रूप में बदल जाती है। इसी प्रकार 'सूखा बरगद' में सुहैल के अब्बू की सोच के कारण अलग विचारों के कारण है वे सारे परिवार से कटकर अलग एकांकी जीवन बिताते हैं। ''उसे जिन्दगी भर कट्टरपंथियों से जूझना पड़ता है, पर सामाजिक और आर्थिक दबावों के सामने वह घुटने नहीं टेकता।''[2]

युवा पीढ़ी का भटकाव आज एक अहम समस्या बन गई है। आज समाज के लोग अपने तक सीमित होकर रह गए हैं। बदलते जीवन मूल्यों एवं संघर्षों ने आज परिवार को रसहीन बना दिया है। मनुष्य का समस्त आनंद, उल्लास, माधुर्य समाज से धूमिल हो चुका है। विशेष रूप से हमारी युवा पीढ़ी अर्थात् युवा पीढ़ी जो अपने घर–परिवार के प्रति उदासीन बने रहते हैं वे अपने पथ से भटक रहे हैं। 'बशारत मंजिल' उपन्यास का पात्र संजीदा अट्ठारह वर्ष की आयु में ही धूम्रपान व कामुकता जैसी विसंगतियों की ओर प्रवृत्त हो जाता है। वह गुलबदन नाम की वेश्या के मोह में पड़कर अपना घर बर्बाद करने में कोई कसर नहीं छोड़ता। वह अपनी इन बुराईयों के बारे में अपने मित्र से चर्चा करता है– ''गुलबदन ही वह औरत है जिसे उसने बखूबी जाना है।''[3]

संजीदा का कॉलेज के मित्रों के साथ शराब पीना तवायफों के कोठे पर जाना उसके जीवन को नष्ट होने की कगार पर पहुँचा देता है। उसी प्रकार 'सूखा बरगद' उपन्यास का सुहैल भी इसी प्रकार कॉलेज पहुँचकर एक लड़की के प्रेम में धोखा देने पर बुरी संगत में चला जाता है। वह एक होनहार छात्र था, किन्तु प्रेम में असफल होने पर नशे का आदी हो जाता है। वह अपने इंजीनियरिंग की डिग्री को भी पूरा नहीं कर पाता। बार–बार फेल होता जाता है तब उसे उसका दोस्त समझाता

है– ''तुम कुछ भी कहो लेकिन तुम्हारा यह दारू का चक्कर ज्यादा ही होने लगा है। अबे, आखिर मतलब क्या है इतने टाइम औंधे–सौंधे लोगों में बैठकर पत्ते खेलने या शराब पीने का।''[4]

भारतीय समाज में पाश्चात्य सभ्यता के आगमन से नशाखोरी और वेश्यावृत्ति ने ऐसी भयावह स्थिति पैदा कर दी है जो रूकने का नाम नहीं ले रही है। इनमें सबसे ज्यादा युवा वर्ग ही शामिल है। संजीदा और सुहैल जैसे नवयुवक भी ऐसी विसंगतियों से बच नहीं सके। लेखक ने पथ से भटकने वाली इन्हीं विसंगतियों का चित्रण दोनों उपन्यासों में किया है।

सामाजिक व्यवहार का स्थिर और चिरकाल तक चलने वाला अंग रूढ़ि कहलाता है और जब यह रूढ़ियाँ या व्यवहार सदियों तक चलते रहते हैं तो ये परम्परा कहलाते हैं। इन्हीं परंपराओं के कारण समाज में अंधविश्वास फैलता है जो व्यक्ति या समाज की प्रगति को रोकता है। भारतीय समाज भी अंधविश्वास से ग्रसित है। समाज में अशिक्षित वर्ग तो इन अंधविश्वासों में जकड़ा हुआ ही है किन्तु शिक्षित समाज भी कुछ हद तक इसे बढ़ाता या अपनाता दिखाई देता है। लेखक ने अपने दोनों उपन्यासों में इस अंधविश्वास की परत को खोलते हुए दिखाया है, जैसे 'बशारत मंजिल' उपन्यास में अमतुल कबीर रूढ़िवादी विचारों की स्त्री है, जिसका ज्यादा से ज्यादा वक्त लोगों को गण्डे–ताबीज देने में बीतता है– ''लोग उनके पास आते थे, जिन्नात और भूत–प्रेत के लिए ताबीज और दम का पानी लेने के लिए।''[5]

लेखक के अनुसार लोगों में अंधविश्वास की जड़े मजबूत होती जा रही थी। प्रत्येक छोटे–छोटे कार्य अंधविश्वास की नजर से देखे जाने लगे थे। अमतुल कबीर बड़ी बेगम से कहती है कि ''छोटे मिर्जा कहो तो सही– सीढ़ी को सिल पर सौंफ सूखने को रखी है सरककर खड़े हो तो साया न पड़े।''[6]

आज मानव इतना महत्वाकांक्षी हो गया है कि बिना किसी मेहनत के अंधविश्वास के जरिये सुख–सुविधाओं का भोग करना चाहता है। इस तथ्य का पता 'सूखा बरगद' उपन्यास के सुहैल और उसे अब्बू के बीच हुए वार्तालाप से चलता है जिसमें सुहैल के अब्बा सुहैल को समझाते हैं कि शासक वर्ग धर्म का उपयोग अपने स्वार्थ के लिए करता है। इसके द्वारा शासन करने वाले जनता की गरीबी और अंधविश्वास का सहारा लेकर उन्हीं का शोषण करते हैं। जगह–जगह मस्जिद और मंदिर बनवा देना इसी शोषण की एक सुनियोजित साजिश है, जिसमें लोग अपने दुःख को नसीब समझकर सहते रहे और मरने के बाद जन्नत की दुआ करें और चालाक लोग यही जगत के मजे लेते रहे और मनमानी करते रहे तो दूसरी तरफ सुहैल की अम्मी इसी अंधविश्वास के चलते बीमारी को बीमारी न मानकर झाड़–फूँक करती रहती है– ''बारी–बारी कोई अब्बू के सिरहाने बैठा कुरान की तिलावत कर रहा है तो कोई लपक–लपककर पीर फकीरों से ताबीज और दम का पानी ला रहा है। . . . रोज अब्बू की तन्दरूस्ती के लिए जानवर सदके किए जा रहे थे।''[7]

इस अंधविश्वास का कारण अज्ञानता तो है ही कुछ हद तक इनकी आर्थिक स्थिति भी है। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ न होने के कारण ये लोग भाग्यवादी होते जाते हैं क्योंकि आर्थिक स्थिति मजबूत न होने के कारण सबसे ज्यादा शोषण निम्न तबका ही झेलता है। चाहे वह अल्पसंख्यक हो या बहुसंख्यक आर्थिक स्थिति धर्म या सम्प्रदाय नहीं देखती उसमें हिंदू भी उतना ही पिसता है जितना मुस्लिम पिसता है। इस बात को लेखक ने अपने दोनों उपन्यासों के माध्यम से दर्शाया है। रशीदा के माध्यम से यह बात बार–बार दोहराई है कि उनके परिवार की पहचान उनके सामाजिक आर्थिक

स्थिति के कारण होती है न कि सम्प्रदाय विशेष से होती है। रशीदा महसूस करती है कि जीवन के छोटे–छोटे सुखों को तलाशते हुए या दुःखों को झेलते मध्यमवर्गीय समुदायों के बीच कोई बुनियादी फर्क नहीं होता है। फर्क केवल सांस्कृतिक स्तर पर नजर आता है। वह यह कहते हुए अपने मन को तसल्ली दे रही है। हम लोग कल्लों और सईदा आपा की दुनिया और कुसुम, नसीमा या दीपक की दुनिया के अलावा एक तीसरी दुनिया में थे, जहाँ कभी ऊपर से बहुत दूर नीचे की दुनिया के पास पहुँच जाते– ''मैं सोचती हूँ जहाँ मैं थी वहाँ से कल्लों या कुसुम तक बराबर की ही दूरी थी। आस–पास की थोड़ी–सी चीज़ें न होती तो मैं भी कल्लो हो जाती। इब्बू दादा की गालियाँ सुनती, भैंस के आगे चारा डालती या कुछ और थोड़ा सा होता तो कुसुम लड़कों से फ्लर्ट करती।''[8]

आर्थिक स्थिति के कारण कई बार प्रतिभा भी दम तोड़ देती है। सुहेल अपनी प्रतिभा और मेहनत से इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश पा लेता है लेकिन रशीदा को साइंस छोड़कर आर्ट्स के विषय लेकर बी०ए० करना पड़ता है उसकी इच्छा डॉक्टर बनने की थी किन्तु आर्थिक स्थिति के कारण वह डॉक्टर बनने का ख्याल अपने दिल से निकाल देती है। वह अंग्रेजी से एम०ए० करने के बाद जर्नलिस्ट बनने की सोचती है परन्तु घर की आर्थिक स्थिति उसके रास्ते में बाधा बनकर खड़ी हो जाती है और वह अपने पिता के बाद अपने घर की आर्थिक सहायता करने के लिए रेडियो स्टेशन पर एनाउंसर की नौकरी करने लगती है।

अतः हम कह सकते हैं कि मंजूर एहतेशाम ने अपने दोनों उपन्यास 'सूखा बरगद' एवं 'बशारत मंजिल' में मुस्लिम समाज की मानसिकता का सटीक चित्रण किया है। मुस्लिम समाज की मानसिकता के विभिन्न पक्षों को उजागर किया है।

सन्दर्भ

1. गोपालराय. (2016). हिन्दी उपन्यास का इतिहास. छठां संस्करण. राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०: 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–110002. पृष्ठ **356.**
2. वही. पृष्ठ **356.**
3. मंजूर, एहतेशाम., (2021). बशारत मंजिल. दूसरा संस्करण. राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०: 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–110002. पृष्ठ **95.**
4. मंजूर, एहतेशाम. (2021). सूखा बरगद. दूसरा संस्करण. राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०: 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–110002. पृष्ठ **123.**
5. मंजूर, एहतेशाम. (2021). बशारत मंजिल. दूसरा संस्करण. राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०: 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–110002. पृष्ठ **44.**
6. मंजूर, एहतेशाम. (2021). बशारत मंजिल. दूसरा संस्करण. राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०: 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–110002. पृष्ठ **62.**
7. मंजूर, एहतेशाम. (2021). सूखा बरगद. नौंवा संस्करण. राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०: 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–110002. पृष्ठ **150.**
8. मंजूर, एहतेशाम. (2021). सूखा बरगद. नौंवा संस्करण. राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०: 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–110002. पृष्ठ **51.**